‘चित्शक्ति विलास’ से उद्धरण

बेन विलियम्स द्वारा पढ़ा गया

बाबा जी लिखते हैं :

> मैंने एक महात्मा की किताब में एक ज्ञाननिष्ठ, ध्यानरत महापुरुष के निर्वाण के समय की कुछ बात पढ़ी थी जो बहुत ही अच्छी, सच्ची, अनुभवयुक्त है। महात्मा जी को कालज्ञान द्वारा अपने अन्त समय का पता लग गया था। जाने के समय वे सभी से मिले और सभी से उन्होंने आशीर्वाद माँगा, सभी से क्षमा माँगी। सभी उपस्थित जनों को धन्यवाद दिया। तदनन्तर सब दिशाओं को, पंचमहाभूतों को और विद्यादाता गुरु को नमस्कार करके, जिस शरीर से उन्होंने परमार्थ-यात्रा पूरी की, जिस शरीर में परमात्मा को देखा, जो शरीर परमात्मा का चलता-फिरता-बोलता मन्दिर है, जो शरीर परमात्मा से प्राप्त है, उस शरीर को धन्यवाद दिया, उसका सम्मान किया।
>
> वे सन्त महामुनि हाथ जोड़कर अपने प्यारे शरीर से कहने लगे, “हे मेरे प्यारे शरीर! तेरे ही पूर्ण अनुग्रह से, तेरी सहायता से मैं परमात्मा तक पहुँच पाया हूँ। तुझे मैं धन्यवाद देता हूँ। मैंने तुझे न जाने कितना पीड़ित किया होगा। कितना त्रास दिया होगा। मैंने तुझे बहुत यातना-पीड़ा दी है। परन्तु तूने हरदम मेरी सहायता की। मैं तेरा सच्चा ऋणी हूँ! तुझसे मैंने ध्यान की उत्तम गति पाई है। हे मेरे प्यारे शरीर! तुझसे ही मैंने उत्तम कुशलतापूर्ण मति पाई है। तुझसे ही मैंने ध्यान द्वारा निर्विकल्प स्थिति प्राप्त की है और परमोत्कृष्ट पदवी पाई है। इसलिए प्यारे मित्र, मैं तेरा सदा ऋणी हूँ। मैंने जाने-अनजाने तेरे प्रति कितने अपराध किए होंगे, परन्तु तूने तो सदा उपकार ही किया, सहायता ही की, अपकार के बदले में सहायक बनकर संगी-साथी बना। तेरे बिना न मैं परमात्मा तक पहुँच सकता था न तो उत्तम साधना कर सकता था।” इस प्रकार शरीर को सम्बोधित करके वे महात्मा ब्रह्मलीन हो गए।

और बाबा जी आगे लिखते हैं :

> जिसको शरीर का बोध हो गया है, वह उसको योगपूर्ण, प्रेमपूर्ण तथा ध्यानपूर्ण बना देता है।[१]

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास : एक आध्यात्मिक आत्मकथा* [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०२२] पृ. २५२-२५३।